Music Journal *Vageeshwari The World Classical Music e-Research Journal*
Volume 36 *December 2022*
Page No. 72-77 *ISSN 0975-7872*

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi

No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बंदिश के निर्माण तत्त्व

डॉ. दीप्ति बंसल
एसोसिएट प्रोफेसर
संगीत विभाग (गायन), दौलत राम कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सूचक शब्द : बन्दिश, वाग्गेयकार, रस, मुखड़ा, लय–ताल, घराना

सारांश : हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में हर गायन शैली का परिचय सर्वप्रथम हमें एक बंदिश के रूप में होता है। शास्त्रीय संगीत का आधार राग है और बंदिश एक तरह से नींव है राग को समझने की। बंदिश के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले तत्त्वों की चर्चा आवश्यक है क्योंकि ये सभी बंदिश के सौन्दर्य के संवर्धन में सहायक होते हैं। राग, ताल, रस, भाव, घराना, विषय, भाषा आदि तत्त्वों से मिलकर एक बंदिश का निर्माण होता है। अनेक वाग्गेयकारों द्वारा रचित बंदिशें हमारे शास्त्रीय संगीत की धरोहर हैं। शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परम्परा इन्हीं बंदिशों के माध्यम से सुरक्षित है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में 'बंदिश' एक विशिष्ट स्थान रखती है। बंदिश शास्त्रीय संगीत की सृजनात्मक शक्ति है। मूल रूप से देखें तो 'बंदिश' शब्द फारसी भाषा का है जिसका अर्थ है बाँधने की क्रिया या भाव। कंठ संगीत में बंदिश का अर्थ है गेय शब्द रचना। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का आधार राग है और राग व ताल में बद्ध गेय रचना को सामान्यतः बंदिश कहा जाता है। बंदिश एक तरह से नींव है राग को समझने की। बंदिश की निर्मिति के लिए प्रयुक्त होने वाले तत्त्व एक वाग्गेयकार के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। जिस प्रकार एक व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है संस्कारों से, उसी प्रकार राग, ताल, रस, भाव और प्रस्तुतीकरण के संयोग से 'बंदिश' का निर्माण होता है।

बंदिश का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व होता है उसका गठन। बंदिश यदि सुगठित हो तो वह एकदम से हमें आकर्षित करती है। बंदिश में कसावट बहुत महत्त्वपूर्ण होती है।[1] ऐसी बंदिश की श्रोताओं द्वारा मुक्त कंठ से प्रशंसा की जाती है। राग देस में पंडित बड़े रामदास जी की एक अद्भुत रचना है –

Music Journal — ***Vageeshwari The World Classical Music e-Research Journal***
Volume 36 — *December 2022*
Page No. 73 — *ISSN 0975-7872*
Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi
No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

स्थायी – बादर रे, अरज गरज बरसन, लागे बिजुरी चमक जिया डराए

अंतरा – ऐसे समय पिया छाए विदेसवा, जाओ कोउ लाए पिया मनाए[2]

तीनताल में रचित इस बंदिश के बोल लय के साथ इस तरह से गुंथे हैं कि वे बंदिश में प्राण फूंक देते हैं। इस सुगठित बंदिश में राग का स्वरूप भी शुद्धता से परिलक्षित हुआ है। इसी प्रकार राग हंसध्वनि में पं. रामाश्रय झा 'रामरंग' द्वारा निर्मित ख़्याल की एक उत्कृष्ट बंदिश है –

स्थायी – लागी लगन सखी पति सन, परम सुख अति अभिनन्दन

अंतरा – अंग सुगंधन चन्दन माथे, तिलक धरे मृग नयन
अंजन पवन ते अमर हो, नित पति काल सुखन[3]

राग भूपाली में ध्रुपद शैली की एक सरल बंदिश है – 'तू ही सूर्य, तू ही चंद्र' जो अक्सर हम स्कूल–कॉलिज के विद्यार्थियों को सिखाते हैं। यह बंदिश 'सम' से शुरू होती है और इस बंदिश का गठन ध्रुपद की लयकारियों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। तिगुन की लयकारी करते समय तीन–तीन मात्रा के चार खण्ड बन जाते हैं। उपरोक्त धुपद की बंदिश में शब्दों का उछाल भी उसी प्रकार से आता है –

तू ऽ ही   सू ऽ र्य   तू ऽ ही   चं ऽ द्र

बाकी लयकारियों में भी शब्दों के अनुरूप खंड बनाने में सुविधा होती है।

बंदिश का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है बंदिश के विषय, साहित्य और भाषा। बंदिशों के विषय अधिकांश रूप से मानव–जीवन और प्रकृति वर्णन से संबंधित रहे हैं। मंगल–प्रसंग, विरह–मिलन के भाव, ईश्वर–भक्ति, ऋतु वर्णन, प्रकृति चित्रण, सामान्य मानवीय व्यवहार इत्यादि विषय हमें विभिन्न गायन शैलियों की बंदिशों में मिलते हैं। काव्य गीत का एक बेहद महत्त्वपूर्ण अंग है। शब्द जब किसी श्रोता के कान में जाते हैं तब उसके मन में एक चित्र बनता है। श्रोता उस चित्र की कल्पना में उड़ान भरता है और आनन्द लेता है। राग बहार में प्रकृति चित्रण लिए एक अति सुंदर बंदिश है –

स्थायी – नवल कली नव कुसुम, नव लता नवल द्रुम
नवल ऋतु बसंत छाई

अंतरा – नव प्रकृति नव विहंस, नव मधुप नवल रस
नवल कोकिल सरस, बोलत अमराई

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi

No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की बंदिशों की भाषा अधिकतर हिंदी होती है। मगर ये हिंदी साहित्यिक हिंदी से थोड़ी अलग रहती है। साहित्यिक भाषा के शब्दों का घुमाव तथा शब्दों का संतुलन बंदिश में रचना रूपी शरीर के साथ व्यवस्थित प्रतीत नहीं होता।[4] जितने भी हिंदी–भाषी क्षेत्र हैं उनमें प्रयुक्त होने वाली बोल–चाल की भाषा का प्रयोग विभिन्न बंदिशों में किया जाता है। ये बोल–चाल की भाषा के शब्द माधुर्य और अपनापन लिए हुए होते हैं। मिठास लिए हुए ये शब्द आसानी से गेय होते हैं। जैसे–'निकली' के स्थान पर 'निकसी' शब्द का प्रयोग, 'रात' की जगह 'रैना', 'वर्षा' के स्थान पर 'बरखा' शब्द का प्रयोग आदि। बंदिशों में बनारसी और भोजपुरी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है जैसे – बालमवा, नैनवा, मंदरवा, उमरिया, संदेसवा, नैहरवा, अटरिया इत्यादि। उदाहरणार्थ राग तोड़ी की सर्वप्रिय बंदिश–

स्थायी – कांकरिया जिन मारो लंगर, अंगवा लग जाए लंगर

अंतरा – सुन पावे मोरी सास ननदिया, दौरि दौरि घर आवे लंगर

रागानुसार भी बंदिशों के शब्दों का चयन व रचना की जाती है। ऋतुपरक रागों में अधिकतर ऋतु से संबद्ध साहित्य मिलता है। उदाहरणार्थ राग गौड़ मल्हार की बंदिश 'झुक आई बदरिया सावन की' या फिर राग बसंत की बंदिश 'सरस रंग फूल रह्यो' आदि। इसी प्रकार प्रातःकालीन, भक्तिपरक रागों जैसे अहीर भैरव में 'जागिए नंदलाल अब तो' अथवा राग भैरव में 'जग करतार तुम, तुम्ही बंधाओंगे धीर' जैसे शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। कुछ वाग्गेयकारों ने अपनी रूचि अनुसार भी बंदिशों के शब्द रचे हैं। रामभक्त पं. रामाश्रय झा 'रामरंग' द्वारा रचित अनेक बंदिशों में राम संबंधित वर्ण्य विषय दृष्टिगोचर होते हैं जैसे राग भूपाली की इस बंदिश में–

मंगल करहु द्रबहु मो पर प्रभु, दशरथ के सुत अवध बिहारी
अगम अपार चरित तब रघुपति, लघु मति बरनि न जाहीं
कीजैं सहाय 'रामरंग' सियवर, बुद्धि विवेक सुधारी

बंदिश के निर्माण में रस और भाव विशेष स्थान रखते हैं। रस का शाब्दिक अर्थ है आनन्द। संस्कृत वाङ्गमय में रस की उत्पत्ति 'रस्यते इति रस' इस प्रकार की गई है अर्थात् जिससे आनंद प्राप्त हो वही रस है। काव्य में रस का वही स्थान है जो शरीर में आत्मा का। बंदिश का प्राणतत्त्व है रस। शास्त्रों में नवरसों की कल्पना की गई है। ये रस हैं – श्रृंगार, हास्य, रौद्र, करुण, वीर, अद्भुत, वीभत्स, भयानक और शांत। इन्हीं रसों से भाव उद्दीप्त होते हैं, जैसे यदि बंदिश में श्रृंगार रस है तो हर्ष व विषाद का भाव उत्पन्न होगा। राग और रस के अनुरूप जब कोई बंदिश रची

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi
No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

जाती है तो उसका एक अलग ही प्रभाव होता है। श्रृंगार प्रकृति के राग बिहाग में जब निम्नलिखित बंदिश की प्रस्तुति की जाती है तो प्रणय–भाव उद्दीप्त होता है।

स्थायी – लट उलझी सुलझा जा बालम
हाथों में मेहंदी लगी मोरे बालम

अंतरा – माथे की बिंदिया बिसर गई सारी
हाथ से अपने लगा जा बालम

इसी प्रकार करुण रस के राग जोगिया में इस ठुमरी में विरह–भाव उत्पन्न होता है।

स्थायी – पिया के मिलन की आस
छिन–छिन बहत कजरो जोबनवा

अंतरा – धन धन भाग सखी वा दिन मेरो
जो मैं जाऊँ पिया पास री

स्वरों का सौंदर्य लय–ताल की सहायता से प्रस्फुटित होता है। अतः ताल और लय एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग है बंदिश का। केशव चन्द्र वर्मा के शब्दों में ''बंदिश में ताल की लय का निर्धारण बंदिश के शब्द, अर्थ, भाव आदि से करना चाहिए।''[5] ताल के छंद के अनुसार बंदिश की चाल भी बदल जाती है। तालों की लय विलंबित, मध्यलय, द्रुत, अति द्रुत आदि हो सकती है। यह गायन शैली पर निर्भर करता है। विलंबित ख़्याल की प्रस्तुति धीमी या विलंबित लय में की जाती है। इससे उसमें गंभीरता और चैनदारी आती है। ये बंदिशें अक्सर एकताल, तिलवाड़ा, झूमरा, तीनताल आदि के विलंबित रूप में मिलेंगी। द्रुत लय की बंदिशें तीनताल, एकताल, रूपक इत्यादि तालों में मिलती हैं। राग बागेश्री में एकताल की द्रुत ख़्याल की बंदिश है –

स्थायी – अपनी गरज पकड़ लीनी बैंया मोरी
बैंया मोरी जोरा जोरी

अंतरा – पनघट पर नंदलाल, करत मोसे छेड़छाड़
लपक झपक सारी मोरी चूरियाँ मरोरी

राग मिश्र सिंदूरा में मध्यलय झपताल की एक बंदिश है – 'झूमत आवे मोहन मतवारे, ए री सखी री वाके ढंग निराले'

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi

No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

'मुखड़ा' बंदिश का एक महत्त्वपूर्ण अंग होता है। सम पर अलग–अलग तरह से मुखड़ा कह कर आना ख़याल गायन की एक ख़ासियत है। इसलिए मुखड़े की रचना ऐसी होनी चाहिए कि कलाकार अपनी प्रस्तुति को आकर्षक बना सके। गायन करते समय कलाकार मुखड़े पर कभी मूल लय में तो कभी डेढ़ गुनी या दुगुनी लय में आता है। लय के हिसाब से मुखड़े में लचीलापन भी होना ज़रूरी है। बंदिश का मुखड़ा कैसा है, कौनसी मात्रा से उठता है, कितनी मात्रा का है, इन सभी का बंदिश के सौंदर्य संवर्धन में हाथ रहता है। भैरवी की ये बंदिश चौथी मात्रा से उठती है –

स्थायी – तेरो कान्हा मोसे करत ठिठोरी, बरजोरी बैंया पकर झकझोरी

अंतरा – मैं जमुना जल भरन जात रही, अब्दुल सर से गागर फोरी[6]

तानयुक्त इस बंदिश का चलन अत्यंत खूबसूरत है और तीनताल के अंतर्गत विभिन्न बोल–बनाव, तान व लयकारी द्वारा अत्यधिक खिलता है। ताल की लय और बंदिश के समन्वय से राग का स्वरूप खिल उठता है।

अक्सर हमें कलाकारों के मुख से ये वाक्य सुनने को मिलता है – 'ये घरानेदार बंदिश है।' संगीत में घराना शब्द का अर्थ है वंश अथवा परम्परा। शास्त्रीय संगीत और उपशास्त्रीय संगीत की गायन शैलियों के विभिन्न घराने हैं। ध्रुपद गायकी में डागर घराना, दरभंगा घराना, डुमरांव घराना, बेतिया घराना आदि; ख़्याल गायन में किराना घराना, ग्वालियर घराना, आगरा घराना, जयपुर घराना आदि और ठुमरी गायिकी में बनारस और पंजाब आदि के नाम अक्सर सुनाई देते हैं। गायिकी से घराने का निर्माण हुआ है। जब पीढ़ी–दर–पीढ़ी गुरु मुख से प्राप्त शिक्षा की कुछ विशेषताऐं चलती चली आती हैं तो उनसे एक घराने का निर्माण होता है। विभिन्न घरानों के गुरूजनों के मुख से सुनी और सीखी गई बंदिशों को 'घरानेदार बंदिश' की संज्ञा दी जाती है। एक कलाकार में सौंदर्य तत्त्व अमूर्त रूप से विद्यमान रहता है। कलाकार के संवेदनशील मन को जब उसका एहसास होता है तब वह किसी न किसी रूप में उसे अभिव्यक्त कर देना चाहता है। मन में बने उस नादरूप को अभिव्यक्ति देने के लिए वह बंदिश रचता है।[7] ग्वालियर घराने में पं. ओंकारनाथ ठाकुर, पं. शंकरराव व्यास, पं. विनय चन्द्र मौद्गल्य, पं. बलवन्त राय भट्ट जैसे बंदिश–रचनाकार हुए हैं। जयपुर घराने में उस्ताद अल्लादिया खाँ और किराना घराने में उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के नाम उल्लेखनीय है। आगरा घराने में भी दरसपिया, प्रेमप्रिया, जगन्नाथ बुवा, सी.आर. व्यास आदि वाग्गेयकार हुए हैं। परम्परागत रूप से चली आ रहीं पुरानी बंदिशें आज भी

Copyright@2022 Author(s) retain the copyright of this article
Homepage : ejournal@mfa.du.ac.in
Publisher : Department of Music, Faculty of Music & Fine Arts, University of Delhi
No part of contents of this paper may be reproduced or transmitted in any form or by any means without the permission of Author

अपनी उत्कृष्टता के कारण संगीत क्षेत्र में अपना स्थान बनाए हुए हैं। नई बंदिशें रचने और प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति भी आधुनिक युग में पनपी है। पं. रामाश्रय झा 'रामरंग', विदुषी डॉ. प्रभा अत्रे, पं. दीपक चटर्जी, डॉ. प्रेम प्रकाश जौहरी 'मनहर' इत्यादि अनेक बंदिश रचनाकारों की बंदिशों ने भी संगीत के क्षेत्र में लोकप्रियता हासिल की है।

बंदिश का प्रस्तुतीकरण भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। राग और घराने की विशेषताओं से युक्त करके बंदिश को विभिन्न अलंकरणों से सजा कर जब प्रस्तुत किया जाता है तो रस, भाव और सौंदर्य की उत्पत्ति होती है। कण, मुर्की, खटका, तान, बोल–तान, मींड इत्यादि से बंदिश को सजाया जाता है। बंदिश के प्रस्तुतीकरण पर कलाकार के घराने, व्यक्तित्व और निजी विशेषताओं से युक्त गायिकी का प्रभाव पड़ता है। जितना मंझा हुआ कलाकार होगा, उतनी ही उत्तम प्रस्तुति होगी बंदिश की। बंदिश का प्रमुख उद्देश्य है किसी परंपरा का निर्माण करना और उसके द्वारा कला का संवर्धन करना। संगीत जगत् सदैव ऋणी रहेगा दो महान विभूतियों का – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे और पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी का जिन्होंने अनेक कलाकारों द्वारा रची पुरानी बंदिशों को स्वरलिपि बद्ध रूप में संकलित किया और सुरक्षित रखा। ये बंदिशें संगीत जगत् की अनमोल धरोहर हैं जिनसे हमारा शास्त्रीय संगीत सुरक्षित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अभय दुबे, बंदिश में लय ताल तथा बंदिशों का प्रस्तुतीकरण, संगीत (जून 2009), पृ. 38, संगीत कार्यालय हाथरस।
2. स्रोत – स्व. विदुषी सविता देवी, ठुमरी गायिका–बनारस घराना।
3. पं. रामाश्रय झा 'रामरंग', अभिनव गीतांजलि भाग एक (1968), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. डॉ. अभय दुबे, बंदिश में काव्य, संगीत (अगस्त 2009), पृ. 17, संगीत कार्यालय, हाथरस।
5. कोशिश संगीत समझने की (1988), पृ. 39, प्रदीपन, इलाहाबाद।
6. स्रोत – स्व. विदुषी सविता देवी, ठुमरी गायिका बनारस घराना।
7. डॉ. मो.वि. भाटवडेकर, बंदिश–एक मुक्त चर्चा, पृ. 216, मुक्त संगीत संवाद (जनवरी 1995) गानवर्धन संस्था, पुणे।